व्यञ्जन *n.* (r. अञ्ज् praef. वि manifestare, s. अन) 1) consonans littera. Sa. 5.25. 2) barba. Br. 1.28.

व्यतिक्रम *m.* (r. क्रम् c. अति praef. वि transgredi, suff. अ) transgressio, peccatum. In. 5.43.

व्यथ् 1. *A. interdum P.* (praet. redupl. विव्यथे, v. gr. 456a).; दुःखभयचलने) agitari, commoveri, perturbari *dolore vel timore.* N. 16.21.: इमाम् ... दृष्ट्वा ममा 'पि व्यथते मनः; 22.23.: हृदयं व्यथितश्चा ''सीत्; 12.118.: त्वान् दृष्ट्वा व्यथिताः स्मे 'ह; Sa. 5.46.: सन्तो न सीदन्ति न व्यथन्ते; A. 7.12.: ततो मे व्यथितम् मनः; Bh. 11.34.: मा व्यथिष्ठा युध्यस्व; 14.2.: प्रलये न व्यथन्ति; Mah. 3.717.: वृष्णयो भग्नसङ्कल्पा विव्यथुः (v. gr. 456a).). — *Caus.* agitare, commovere, perturbare. Bh. 2.15.: यं हि न व्यथयन्त्य् एते ... सो ऽमृतत्वाय कल्पते. (Cf. मन्थ्, मथ्, ratione habitâ, litteras *m* et *v* facile inter se mutari; goth. *withô* commoveo, agito; de lat. *quatio* v. पुथ्, कुन्थ्.)

c. प्र *i. q. simpl.* Bh. 11.45.: भयेन प्रव्यथितम् मनो मे; 11.20.23.24. - R. Schl. II. 18.41.: प्रविव्यथे राजा.

c. प्र praef. सम् *id.* R. Schl. I. 38.16.

व्यथा *f.* (r. व्यथ् s. आ) permotio *animi,* perturbatio. Br. 2.3. Bh. 11.49.

व्यध् 4. *P. interdum A.* विध्यामि (v. gr. 332. 456a). 482. 506. 613. 632.) perforare, ferire, vulnerare, *praesertim sagittis.* Mah. 3.709.: विव्याध हृदयम् पत्त्री; 1.7004.: विध्येत य इदं लक्ष्यम्; 2.948.: शस्त्रैश्चा 'पि न विध्यते; Dr. 8.13.: तम् ... बाणेन विव्याधो 'रसि; Sa. 6.5.: कुशकण्टकविद्धाङ्गी. (Vid. व्याध venator et cf. वध्, बाध्; hib. *fiadhachd* «hunting», *fiadhach* «venison», *fiadhaighe* «a huntsman»; *fiadh* «a deer», *fiadhait* «a wild», *fiadhanta* «fierce, savage, ferocious» cet.; anglo-sax. *vædhan* venari; germ. vet. *weidanôn* venari, pascere, pasci; *weideman,* nostrum *Weidmann*; island. vet. *veidhi* venatio; fortasse lat. *venor* e *ved-nor.*)

c. अनु 1) perforare, ferire, vulnerare post alium. Man. 9.43.: नश्यती 'षुः ... विद्धम् अनुविध्यतः. 2) distinguere, *besetzen.* Ragh. 13.54.: इन्द्रनीलैर् मुक्तामयी यष्टिर् इवा 'नुविद्धा (schol. गुम्फिता).

c. अप abjicere, dejicere, projicere. Dr. 6.21.: पुरा श्मशाने स्रग् इवा 'पविध्यते (sic ed. Calc. pro °वो 'प°); R. Schl. II. 94.24.: मृदितांश्चा 'पविद्धांश्च ... कमलस्रजः. *trop.* negligere. Man. 11.41.: अग्निहोत्र्य् अपविध्या 'ग्नीन् ब्राह्मणः.

c. अप praef. वि dejicere, evertere. Dr. 8.48.: प्रविश्या ''श्रमपदम् व्यपविद्धवृषीघटम्.

c. आ 1) *i. q. simpl.* Gita-Gov. 12.11.: पाणिभिर् आविद्धः. 2) jaculari. Mah. 3.11511.: आविध्या ''विध्य तौ वृक्षान्. Mittere *sagittam.* Man. 9.43.: इषुर् यथा विद्धः. 3) imponere. Bhatt. 20.11.: आविध्यच स्रजम् (schol. G'ay. शिरस्य् आक्षिप्य).

c. आ praef. वि vibrare. Mah. 3.677.: गदाम् चिक्षेप तरसा वीरो व्याविध्य.

c. आ praef. सम् *id.* Ragh. 16.78.

c. परि *i. q. simpl.* Mah. 1.4102.

c. प्र projicere. R. Schl. II. 63.34.: तापसम् ... प्रविद्धकलसोदकम्.

c. प्र praef. वि quassare, concutere. Ragh. 14.54.: अनिलविप्रविद्धा.

c. प्रति *i. q. simpl.* A. 3.26.7.22.

व्यप् 10. *P.* व्यापयामि (क्षये, ut videtur, *Caus.* radicis इ praef. वि, vid. इ praef. अधि Caus.; v. etiam r. व्यय् et Westerg. s. r. इ) destruere.

व्यपगत v. गम् c. अप praef. वि.

व्यपाश्रय *m.* (r. श्रि ire c. आ praef. वि + अप) abitio, discessus. Bh. 18.56. *in fine bah.*

व्यभिचार *m.* (r. चर् c. अभि praef. वि) offensio, violatio, transgressio, peccatum. Hit. 82.22.

व्यभिचारिन् (r. चर् c. अभि praef. वि s. इन्) offendens, violans, transgrediens, peccans. व्यभिचारिणी quae adulterio violat conjugem. Hit. 5.12.

व्यभ्र (*bah.* e वि et अभ्र nubes) vacuus a nubibus. N. 17.11.

1. **व्यय्** 1. *P. A.* et 10. *P.* व्ययामि, व्यये, व्यययामि (गतौ; ut videtur, ex इ praef. वि, vid. अव्यय et व्यप्)